ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मेधामयासिषम्।

सामवेद 171

मैं धारणावती बुद्धि को प्राप्त करूँ।

May I attain superior intellect.

वर्ष 40, अंक 23 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 3 अप्रैल, 2017 से रविवार 9 अप्रैल, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्त्वावधान में आर्य समाज का 143वां स्थापना दिवस सम्पन्न

वर्तमान परिवेश में आर्य समाज के कार्यों को अत्याधुनिक सुविधाओं से विकसित किया जाना चाहिए
– श्री आनन्द कुमार चौहान

अन्दमान निकोबार द्वीप और ऐसे ही अछूते क्षेत्रों में आर्यसमाज का कार्य बढ़ाने का संकल्प लें : तन-मन-धन से करूंगा सेवा
– महाशय धर्मपाल, प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा

भविष्य की चुनौतियों से मुकाबले हेतु वर्तमान पद्धतियों में परिवर्तन आवश्यक – विनय आर्य

राष्ट्र व समाज हित के लिए संगठन सूक्त का क्रियान्वयन जरूरी – सुरेन्द्र कुमार रैली

"आज के पावन पर्व 143वें आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर यहां उपस्थित आर्यजन और किसी भी माध्यम से मेरी भावना को जानने- समझने वाले आर्यजन आर्यसमाज से अछूते क्षेत्रों और अन्दमान निकोबार द्वीप जैसे स्थानों पर आर्यसमाज के कार्यों को बढ़ाने का संकल्प लें। वहां आर्यों का संगठन बनाकर आर्यसमाज के लिए भूमिका तैयार करें मैं आर्यसमाज के निर्माण, उन्नति और वैदिक धर्म के प्रसार के लिए तन-मन-धन से सेवा करूंगा।" ये विचार सुप्रसिद्ध समाजसेवा, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान महाशय धर्मपाल जी ने नई दिल्ली के कमानी सभागार में आयोजित 143वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर अध्यक्ष के रूप में व्यक्त किए।

इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के उप प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली ने राष्ट्र व समाज हित हेतु संगठन सूक्त के महत्त्व व उसके कार्यान्वयन की अति आवश्यकता पर सभी का ध्यान आकर्षित किया तथा अपने अनुभव बाँटते हुए बताया कि बुराइयों से बचते हुये भविष्य को सुन्दर बनाना है। आर्य समाज को सकारात्मक कार्यो से आगे बढ़ाया जाना चाहिए जो भी

आर्यसमाजों को मिलेगा प्रति दो वर्ष में बेहतर व्यवस्था एवं स्वच्छता पुरस्कार
प्रथम 1 लाख, द्वितीय 51 हजार और तृतीय 31 हजार रुपये
आर्यसमाज डिफेंस कालोनी की ओर से मिलेंगे पुरस्कार

स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर मंचस्थ अतिथिगण सर्वश्री विनय आर्य, सत्यानन्द आर्य, कीर्ति शर्मा, विद्यामित्र ठुकराल, हरिओम बंसल, आनन्द कुमार चौहान, अजय सहगल, धर्मपाल आर्य, राजेन्द्र दुर्गा, विक्रम नरुला एवं आर्यजनों से भरा कामिनी सभागार। – शेष पृष्ठ 4 एवं 8 पर

तन समर्पित – मन समर्पित और यह जीवन समर्पित – चाहता हूं देश की धरती – तुझे कुछ और भी दूँ

समर्पण : महाशय धर्मपाल जी का 94वाँ जन्मदिवस सम्पन्न

चाहता हूं आर्यसमाज के कार्य – वैदिक धर्म के कार्य – करता रहूं – करता रहूं – महाशय धर्मपाल

आर्यसमाज में दानवीर भामाशाह के रूप में प्रतिष्ठित वरिष्ठ समाजसेवी, उद्योगपति, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के प्रधान एवं अन्य अनेक आर्य संस्थाओं, गौशालाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों यहां तक कि जेल में कैदियों को व्यवसायिक प्रशिक्षण की व्यवस्था करके उनके जीवन मे 'परिवर्तन करने वाले 94 वर्ष के युवा, प्रेरणादायक व्यक्तित्व के धनी महाशय धर्मपाल की का दिल्ली आर्यसमाज एवं एम.डी.एच. परिवार की ओर से 94वां जन्मदिवस 'समर्पण' समारोह के रूप में दक्षिण दिल्ली स्थिति चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर स्थित आर्य सभागार में 26 मार्च, 2017 को आयोजित किया गया।

– शेष पृष्ठ 5 पर

यज्ञमय जीवन के लिए समर्पित है जीवन जिनका - महाशय धर्मपाल जी परिवार के साथ यज्ञ करते हुए यज्ञ ब्रह्मा आचार्या अन्नपूर्णा जी (देहरादून)

वेद-स्वाध्याय

राष्ट्र वन्दना करो

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।। -अथर्व. 19/41/1
ऋषिः **ब्रह्मा।।** देवता - **तपः।।** छन्दः **त्रिष्टुप।।**

शब्दार्थ - स्वर्विदः = आत्मसुख प्राप्त किये हुए **ऋषयः** = ऋषियों ने **भद्रं इच्छन्तः** = लोक-कल्याण की इच्छा करते हुए **अग्रे** = प्रारम्भ में **तपः उपनिषेदुः** = तप का अनुष्ठान यिका और **दीक्षां उपनिषेदुः** = दीक्षा को ग्रहण किया। **ततः** = उस तप और दीक्षा से **राष्ट्रं जातम्** = राष्ट्र उत्पन्न हुआ तथा **बलं ओजश्च जातम्** = राष्ट्रीय बल और ओज भी उत्पन्न हुआ तत् = इसलिए **अस्मै** = इस राष्ट्र के सामने **देवाः** = देव भी **उपसंनमन्तु** = ठीक प्रकार झुकें, सत्कार करें।

विनय - हे राष्ट्रीय भाइयो! क्या तुम जानते हो कि यह राष्ट्र कैसे उत्पन्न हुआ है? हम वैयक्तिक पुरुषों के समूहात्मक इस राष्ट्र-पुरुष का कैसे जन्म हुआ? यह हमारे पूर्व-ऋषियों के 'तप'(पिता) और 'दीक्षा' (माता) का पुत्र है। प्रारम्भ में उन सत्यदर्शी ऋषियों ने, जिन्हें स्वयं आत्मसुख प्राप्त था, जो आप्तकाम थे, अतएव जिन्हे अपना कुछ भी स्वार्थ न था और इसलिए जो केवल लोक-कल्याण के लिए जी रहे थे, भद्र के लिए (लोक-कल्याण के लिए) तप का अनुष्ठान किया। उन्होंने देखा कि सर्वलोकहित के लिए यह आवश्यक है कि वैयक्तिक शक्ति (बल व ओज) से ऊपर एक ऊद्दची-बड़ी उत्कृष्ट शक्ति (बल और ओज) व्यक्तियों के सामने हो, अतः उन्होंने अपनी इस भद्र-कामना का विस्तार किया- सब मनुष्य एक-दूसरे का भला चाहें; मनुष्यों में एक सामुदायिक भल की भावना उत्पन्न हो-इसका उन्होंने घोर यत्न किया। चूँकि मनुष्यों के क्षुद्र स्वार्थ इस उच्च भावना के विरोधी हैं, अतएव उन ऋषियों को मनुष्यों में इस भावना के जमाने में बड़े कष्ट सहने पड़े, बड़ी-बड़ी तपस्याएँ करनी पड़ीं, परन्तु वे दृढ़-संकल्प ऋषि तो व्रत ग्रहण किये हुए थे, दीक्षित थे, मानो इसी प्रयोजन के लिए जन्मे थे, अतः उन्होंने अपना व्रत पूर्ण किया और इस भावना को उत्पन्न कर दिया। सब व्यक्तियों में उत्पन्न हुई इस भावना की मूर्ति ही राष्ट्र है। इस प्रकार है राष्ट्रीय भाइयो! यह हमारा राष्ट्र उत्पन्न हुआ है और इस राष्ट्र-पुरुष का वह अभीष्ट बल ओर ओज भी प्रकट हो गया है जिससे सम्पूर्ण राष्ट्र का कार्य चलता है, अतः हे देवो! ऋषियों की तपस्याओं से उत्पन्न हुए इस बलवान् तेजस्वी राष्ट्र-देव के सामने तुम भी झुको। यह राष्ट्रात्मा महादेवता देवों का भी वन्दनीय है। राष्ट्र का एक व्यक्ति बड़े-से-बड़ा, विद्वान्-से-विद्वान्, महात्मा-से-महात्मा, देव-से-देव होता हुआ भी राष्ट्र का एक व्यक्ति- उस संघात्मक राष्ट्र के सामने तुच्छ है। हे राष्ट्र के व्यक्ति देवो! तुम इस राष्ट्र-देव की वन्दना करो। अपनी सम्पत्तियों को, अपने तुच्छ लाभों को, अपने शारीरिक एवं मानसिक या रुपये-पैसे के स्वार्थ को तथा अपनी बड़ी-से-बड़ी, प्यारी-से-प्यारी कामनाओं को राष्ट्रीय हित के सामने तुरन्त झुका देने के लिए तैयार रहो। यही राष्ट्र-देव की वन्दना है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

पूर्वोत्तर में महिला सशक्तिकरण कितना जरुरी

पिछले महीने से भारत का पूर्वोत्तर इसाई बाहुल राज्य नागालेंड हिंसा में जल रहा है। हिंसा और आगजनी के कारण अधिकतर सरकारी इमारते प्रदर्शनकारियों द्वारा आग के हवाले कर दी गयी, जिस कारण सभी सरकारी कामकाज रुके हुए है। दरअसल हिंसा तब भड़की जब मुख्यमंत्री टी.आर. जेलियांग ने नगर निकाय के चुनावों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही थी। इस फैसले के खिलाफ आदिवासी समूह भड़क उठे और राज्य में जमकर हिंसा हुई जिसमे दो लोगों की मौत भी हो गयी। हिंसा के बाद जेलियांग ने अपना आदेश वापस लिया और मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा भी दे दिया। हमारे देश में खुद को धर्मनिरपेक्ष कहने वाली मीडिया, दिल्ली के अन्दर वातानुकूलित पुस्तकालयों में नारी मुक्ति के आन्दोलन चलाने वाले बुद्धिजीवी नागालेंड हिंसा से मुंह फेरे बैठे हैं। कारण इस हिंसा का असली सच कहीं न कहीं सीधे-सीधे ईसाइयत से जुडा है।

नागालैंड 18वीं 19 सदी ईसाई मिशनरियों के यहाँ पहुंचने पहले तक नागा समुदाय जीववादी, प्रकृति के तत्वों की पूजा करने वाले थे। समाज भले ही पुरुष प्रधान हो लेकिन महिला के अधिकार उतने ही थे जितने वैदिक काल में भारतीय नारी के। लेकिन बीसवीं सदी के अंत तक राज्य की 90 फीसदी से अधिक आबादी ने ईसाई धर्म को स्वीकार कर लिया और बाइबल के अनुसार नारी को शैतान की बैटी मानकर उसे अधिकारों से वंचित कर दिया। आज नगालैंड के हर गांव में कम से कम एक या दो चर्च हैं जो इसाई समुदाय दिल्ली में बैठा यूरोप में नारी की स्वतंत्रता के किस्से सुनाता है क्या वो नागालेंड में जाकर उनके अधिकारों की बात कर सकता है? आज नागालैंड में महिलाओं से जुड़े उनके अधिकारों और उनके राजनैतिक अस्तित्व पर हिंसा ने प्रश्नचिह्न अंकित कर दिया कि क्या नगा महिलाओं को रसोई घर तक ही सीमित रहना चाहिए या फिर समाज की तय की गयी हदों को लांघ कर अपनी खुद की पहचान बनाने के लिए आगे आना चाहिए। ये बहस इसलिए है क्योंकि नगालैंड में महिलाओं का राजनीति में प्रतिनिधित्व बिल्कुल ही नहीं है।

समाचार पत्रों की एक रिपोर्ट के अनुसार नगालैंड को अलग राज्य का दर्जा मिले 50 साल हो गए हैं और आजतक यहाँ की विधानसभा में एक भी महिला विधायक नहीं रही है। अलबत्ता 1977 में रानो मेसे शाजिआ सांसद चुनी गई थी। दिखने को तो मौजूदा संकट महिलाओं को आँगन के पार न निकलने देने के लिए ही दिखाई पड़ता है। नगालैंड की राजनीति या समाज में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कभी रहा ही नहीं। किन्तु समय-समय पर महिलाएं अपने अधिकारों के लिए संघर्ष जरुर करती रहीं हैं। नगालैंड के आदिवासी बहुल इलाकों में पारंपरिक कानून लिखित नहीं है इसलिए अपने हिसाब से लोग इनकी व्याख्या करते हैं। ज्यादातर मामलों में पुरुषों के पक्ष में व्याख्या की जाती है। नागा जनजाति की महिला ग्राम परिषद् की सदस्य भी नहीं हो सकतीं। महिलाओं का पुश्तैनी संपत्ति पर अधिकार नहीं। मतलब साफ है यहाँ के बेहिसाब चर्चों से वो फरमान निकलते है जो कभी छटी सातवीं शताब्दी में यूरोप में लागू थे।

बाइबल कहती है कि गॉड ने आदम की एक पसली से स्त्री की रचना की जो पुरुष के मन बहलाव के लिए बनाई गयी थी। पुरुष को सम्मोहित करने वाली जादूगरनी डायन है। अतः स्त्री को यातना देना पुण्य कार्य है, स्त्री तथा इस धरती को अपने अधीन दबाकर रखना आज्ञाकारी हर इसाई पुरुष का कर्तव्य है और यह कर्तव्य उसे बुद्धि और बल के हर संभव अधिकतम उपयोग के साथ करना है। इन्ही मूलभूत मान्यताओं के कारण इसाई समाज महिलाओं को शैतान की बेटी तथा शैतान का उपकरण माना जाता रहा है। यही नहीं ईसाइयत में किसी महिला का माँ बनना भी पाप है यदि कोई माँ बनती है तो यह उसे गॉड द्वारा दण्डित किये का परिणाम है। यदि किसी समाज में इस तरह की मान्यताओं को सही माना जायेगा तो उक्त समाज में नारी की दशा आप खुद सोच सकते हैं।

जो राजनैतिक समीक्षक इस हिंसा को सत्तारूढ़ गठबंधन के अंदरूनी कलह के रूप में बता रहे हैं क्या वो इस बात को नकार सकते सकते है कि वहां की राजनीति पर ईसाइयत हावी नहीं है? कश्मीर के मदरसों की तरह ही वहां चर्च के पादरी सीधे-सीधे सामाजिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते है? क्योंकि इस ताजा हिंसा के मामले में भी बेपिस्ट चर्चों की मध्यस्थता वहां ली जा रही है। नगालैंड में 28 जनवरी के बाद से जो कुछ सामने आया है, उसने ऐसे कई सवालों को जन्म दिया है जिनका उत्तर खोजा जाना चाहिए। इससे सतही धारणा तो यही बनती है कि शक्तिशाली स्थानीय समूह महिला आरक्षण का विरोधी है। मीडिया की मुख्यधारा यही समझ रही है और देश की सरकार भी यही समझाना चाह रही है, पर हकीकत इससे कोसों दूर है। हर बात में यूरोप की नारी मुक्ति का उदहारण देने वाले पादरी क्या इस बात के लिए संजीदा हो सकते हैं कि उन्हें उनके अधिकार मिलने चाहिए अगर नागालैंड में चुनाव में कोई महिला उतरती है तो उसे पुरुष वोट भी नहीं देना चाहते। ऐसा क्यों? इसका कारण भी वहां तलाशा जाना चाहिए। वहां बलात्कार, प्रताड़ना और घरेलू हिंसा के मामले आम हैं। उसी तरह महिलाओं को राजनीति में भाग लेने की मनाही भी है। उन्हें संपत्ति का अधिकार भी नहीं दिया गया है जबकि नागालैंड की महिलाएं मेहनती हैं मगर सिर्फ मेहनत करते हुए नजर आने से ही क्या उनका सशक्तीकरण हो जाएगा?

- ***सम्पादक***

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

स्वर्गिक सुख के दस उपाय

मानव सदा सुख की कामना करता है। इस सुख को पाने के लिए वेद में दस उपाय बताये हैं। यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के अन्तर्गत आने वाले मन्त्र 22 में सुख पाने के लिए दस उपाय इस प्रकार बताये हैं :-

जनयत्यै त्वा संयौमीदमग्ने रिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा घर्मोऽसि विश्वायुरुरु प्रथाऽउरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतामग्निष्टे त्वचं मा हिंसीद् देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्ठेऽधि नाके ।।

यजु.१.२२ ।।

हम चाहते हैं कि हमारा गृहस्थ जीवन सुखमय हो, आनन्द मय हो किन्तु कैसे हो? यह जानने का हम यत्न ही नहीं करते। यदि कभी कुछ साधन इसके लिए सोच भी लेते हैं तो इन साधनों को हम अपनाते ही नहीं। फिर हमें यह आनन्द कैसे मिले? जो हम चाहते हैं, उसे समझना भी होता है, उसे पाने के लिए उपाय भी करने होते हैं, यत्न भी करना होता है। तब ही वह मिलता है। हम सुख चाहते हैं, स्वर्गिक आनन्द चाहते हैं। यह कैसे मिल सकता है? इसे पाने के लिए हमारे दयालु परमपिता ने कुछ उपाय बताते हुए इस मन्त्र के मध्यम से हमें उपदेश किया है कि हे प्राणी! यदि तू अपने ग्रहस्थ जीवन में स्वर्गिक आनन्द चाहता है तो तू इस मन्त्र में बताये दस उपाय कर। इन दस उपायों को अपना कर ही तू इस सुख को पा सकता है। यह उपाय हैं :-

१. उत्तम सन्तान निर्माण का आश्रम :- ग्रहस्थ है प्रजा को बढ़ाने के लिए। इस प्रजा की उत्पति के लिए ही पत्नि घर में आती है और कहती है कि हे पतिदेव! मैं तुझे साधारण नहीं अपितु उत्तम सन्तान देने के लिए आई हूं। इस निमित तेरा वरण किया है, सम्पर्क किया है।

हमारा यह जो ग्रहस्थ है, यह भोग विलास के लिए नहीं है। यह उत्तम सुप्रजा की उत्पति के लिए है। इसलिए पिता उपदेश कर रहे हैं कि हे जीव! तूं यत्न कर कि तेरी होने वाली सन्तान उत्तम गुणों से युक्त हो।

२. सन्तान प्रभु की दी धरोहर है :- ग्रहस्थ को हमने सन्तान को प्रजा को बढ़ाने के लिए ग्रहण किया है किन्तु इससे हमारी जो सन्तान बढ़ती है, वह सन्तान वास्तव में हमारी सम्पति नहीं होती। इस तथ्य को हम समझें कि हमने इस सन्तान को जन्म दिया है यह सन्तान उस प्रभु की दी हुई धरोहर है, जिस प्रभु का नाम अग्नि है। हम सब मन्त्र की इस भावना को समझें। हम जानें कि यह जिसे हम अपना पुत्र कहते हैं, इसे देने वाला वह अग्निरुप प्रभु है। इस कारण यह उसकी दी हुई धरोहर मात्र है। जिसे हम प्रतिदिन अपना कहते हैं, इसे कुछ समय के लिए प्रभु ने हमें उधार दिया है ।

३. अग्नि व सोम के विकास का प्रयास :- मन्त्र कहता है कि हे प्राणी! मेरी बात को बड़े ध्यान से समझ कि यह, जिसे तू अपनी सन्तान मान कर चल रहा है, यह तेरी नहीं है, यह दो तत्वों से मिलकर बनी है। इसमें एक तत्त्व का नाम है अग्नि और दूसरे को सोम के नाम से जानते हैं। इस प्रकार यह अग्नि और सोम, इन दो तत्वों की है। इस सन्तान को पिता ने अग्नि तत्त्व दिया है। इस सन्तान के निर्माण में माता ने सोम तत्व दिया है। हमारे जीवन में जो आनन्द है, जो सुख हम अनुभव करते हैं, जिस प्रसन्नता को हम पाना चाहते हैं, वह सब अग्नि तत्व और सोमतत्व का ही परिणाम है ।

४. अन्न के लिए पुरुषार्थ :- अन्न एक ऐसी वस्तु है कि जिसका उपभोग इस जगत् के प्रत्येक प्राणी को करना होता है। यह ही हमारे जीवन का आधार है। इसके बिना हम जीवित ही नहीं रह सकते। इसे पाने की कामना करते हुए सुख का जो चतुर्थ साधन मन्त्र बता रहा है, वह यह है कि गृहपत्नि उस पिता से प्रार्थना करती है कि हे प्रभु! अन्न पाने के लिए मैं तुझे ग्रहण करती हूं। मैं आप का ध्यान करती हूं, आप से प्रार्थना करती हूं ताकि मुझे उत्तम अन्न प्राप्त हो सके। इससे जो बात स्पष्ट होती है वह यह कि हम अपने जीवन को आगे चलाने के लिए अपने भोजन के साधन पाने के लिए पुरुषार्थ करें , मेहनत करें और मेहनत करके एसा धन प्राप्त करें जिस से हम अन्नादि भोजन प्राप्त कर सकें ।

५. शक्ति को बनाये रखें :- हे जीव! तू उत्तम अन्न शक्ति का ही परिणाम है। उत्तम अन्न से जो उत्तम रस शरीर में आते हैं, उन रसों के परिणाम स्वरुप ही हम उत्तम, स्वस्थ सन्तान प्राप्त करते हैं। इस अन्न के सेवन से ही हमारे शरीर में प्राण शक्ति निवास करती हैं। प्राण भी तब तक ही रहते हैं, जब तक हमारा शरीर क्रियाशील है। यदि शरीर क्रियाहीन हो जाता है तो प्राण भी इससे दूर होना चाहते हैं। इसलिए इस प्राण शक्ति को सम्भालने के लिए जीव को शक्ति का केन्द्र बनना, शक्तियों का पुंज बनना आवश्यक होता है।

६. शरीर, मन व मस्तिष्क का सन्तुलित व उत्तम विकास :- हे मानव! परमपिता ने तुझे सौ वर्ष की आयु दी है। इस आयु को पूर्ण कहा जाता है। तू पूर्ण आयु वाला है। तेरे जीवन को व्यवस्थित रुप से चलाने के लिए हमारे प्रभु ने तीन साधन दिये हैं। यह साधन जीव के जीवन को व्यवस्थित ढंग से व उत्तम रीति से चलाते हैं । यह साधन हैं, शरीर, मन तथा मस्तिष्क। इन तीनों साधनों का स्वस्थ होना, गतिशील अथवा क्रियाशील होना तथा सतत आगे बढना, उन्नति पथ पर चलना आवश्यक होता है। अतः ऐसा यत्न कर कि यह तीनों सक्रिय बने रहें।

७. हम अपने हृदय को विशाल बनायें :- हे जीव ! प्रभु ने तुझे विस्तार वाला बनाया है। यह प्रभु का ही आदेश है कि तू निरन्तर अपना विस्तार करते हुए आगे को बढ़। निरन्तर विस्तार को, उन्नति को प्राप्त हो। इस प्रयत्न में तू अपनी शक्तियों को तेजी से बढ़ा, तेजी से विस्तृत कर। यदि तू अपनी शक्तियों का विस्तार करेगा, अपनी शक्तियों को बढ़ावेगा तो तेरे जीवन की इस उन्नत परम्परा से तेरे हृदय में भी विशालता आवेगी। अतः अपने हृदय में विशालता लाने के लिए भी तू अपनी शक्तियों का विस्तार कर ।

८. यज्ञ से शक्ति विस्तृत होती है :- जिस प्रभु के माध्यम से हम यह वेदोपदेश प्राप्त कर रहे हैं वह प्रभु ही हमारी शक्तियों को बढ़ाने वाला है। इसलिए यहां यह मन्त्र हमें उपदेश कर रहा है कि वह पिता हमारे सब यज्ञों का रक्षक है । यह जो तू शक्तियों के विस्तार के कार्य में लगा है, यह भी यज्ञ ही है । इसलिए मन्त्र कहता है कि वह पिता तेरी सब शक्तियों का विस्तार करे, इन्हें बढ़ाने में, विस्तृत करने में सहयोगी हो। तू अपने जीवन को यज्ञमय बना। जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि सदा ऊपर ही ऊठती है, आगे ही बढ़ती है तथा जो कुछ इस यज्ञ में डाला जाता है, उसे भी अपने साथ ऊपर, अपने साथ आगे को ले जाती है। इस प्रकार अपने जीवन को यज्ञमय बना कर तू भी अपनी शक्तियों का भरपूर विस्तार कर।

९. हम सदा पभु से जुड़े रहें :- तथ्य की बात तो यह है कि हमारी जितनी भी प्राप्तियां हैं, हमारी जितनी भी उपलब्धियां हैं, वह सब उस पिता के आशीर्वाद का ही परिणाम हैं, उसकी दया का ही परिणाम है। प्रभु हमारे साथ हैं, तब ही हम यह सब कुछ पा सकते हैं अन्यथा हम कुछ भी प्राप्त न कर पाते। इसलिए हम सदा यह प्रयास करें कि हमारा प्रभु से सदा सम्पर्क बना रहे तथा कोई ऐसा काम न करें कि जिससे वह रूष्ट हो जावे और हमारा सम्पर्क, हमारा साथ छोड़ दे। हे जीव जब तक तू प्रभु सम्पर्क में रहेगा तब ही तू ऊपर की इन आठों बातों को अपने जीवन में ला सकेगा, अन्यथा नहीं ।

१०. प्रभु कृपा से हमारा परिपाक हो :- मानव परिपक्वता से ही सफलातएं प्राप्त करता है। यदि वह अपने अन्दर परिपक्वता नहीं ला पाता तो वह ऊल-जलूल कार्य ही करता रहेगा, जिनका कुछ भी परिणाम नहीं होता। इसलिए मन्त्र के अन्तिम भाग में मन्त्र यह उपदेश कर रहा है, यह सन्देश दे रहा है कि वह प्रभु सबका प्रेरक होने से सबको मार्ग दर्शन करता रहता है वह पिता हमें परिपक्व बनावे। परिपक्व होने से हमारी शारीरिक, हमारी मानसिक व हमारी बौद्धिक शक्तियां उत्तम प्रकार से विकसित हों व विकास की ओर निरन्तर आगे बढती रहें। इस प्रकार जो ठीक से उत्तम विधि से परिपाक बनेगा, उसके द्वारा ही वह तुझे सर्वोत्तम स्थान देगा , जिसे स्वर्ग के नाम से जाना जाता है।

- डॉ. अशोक आर्य

104, शिप्रा अपार्टमेंट, कौशंबी
गाजियाबाद (उ.प्र.)- 201010

बोध कथा

खुदा को भूल गए हैं लोग

एक था बालक। उसके पिता बीमार थे। माँ ने कहा-''बेटे! तरे पिताजी के सिर में बहुत दर्द है। ये पैसे ले, बाज़ार से जाकर एस्प्रीन ले आ।''

बालक ने पैसे लिये, चला बाज़ार को। मार्ग में बन्दरों का तमाशा हो रहा था। उसे देखने लगा। दस मिनट, पन्द्रह मिनट, आधा घण्टा, एक घण्टा व्यतीत हो गया। जब तक तमाशा होता रहा, तब तक हिला भी नहीं। तमाशा समाप्त हुआ तो फिर चला दवाइ लेने के लिए। परन्तु उस दिन शहर में शायद तमाशों का दिन था। दुकान से काफ़ी इधर देखा कि नट बाँस पर चढ़कर खेल दिखा राह है। उसको देखने लगा। मग्न हो गया उसमें, भूल गया सब-कुछ।

घर में पिता दर्द से तड़प रहे थे। माँ को चिन्ता होने लगी कि लड़का कहाँ गया? बड़ा बेटा आया तो उससे बोली-''तनिक बाज़ार में जाकर तो देख, बहुत देर हो गई तरे भाई को गए हुए। कहीं कोई दुर्घटना न हो गई हो। इधर तुम्हारे पिता तड़प रहे हैं, उनके लिए औषधि लेने भेजा था, उधर उसका पता नहीं। तुम जाकर पता करो।''

बड़ा भाई बाजार में गया तो देखा कि छोटे सरकार नट का खेल देख रहे हैं। इस प्रकार मग्न कि किसी की सधु ही नहीं। बड़े भाई ने डाँटते हुए कहा-''अरे मूर्ख! तुझे औषधि लेने के लिए भेजा था या नट का खेल देखने के लिए?''

यदि आप बड़े भाई के स्थान पर होते तो आप भी उस बालक को मूर्ख कहते। वास्तव में ही वह मूर्खता की बात कर रहा था।

परन्तु यदि वह मूर्ख था, तो हम क्या हैं? अरे हम भी तो इस आत्मा के रोग की औषधि लेने के लिए संसार के बाजार में आये थे और यहाँ आकर भूल गए तमाशों में। आँखों ने सौन्दर्य को देखा, जिह्वा ने रसों को चखा, कानों ने गीतों को सुना और तमाशे होने लगे हमारे सामने- आज मकान बन रहा है, अब नौकरी हो रही हैं, यह पेट ही चैन नहीं लेने देता प्रातः से सायं तक। वर्ष के आरम्भ से वर्ष के अन्त तक-लगातार, जब तक यम के रूप में बड़ा भाई ही आता, हम इस तमाशे में मग्न रहते हैं। जीविका कमाओ, प्रातः कमाओ, सायं कमाओ। इसे आजीविका से छुटकारा नहीं मिलता।

ख़ुदा को भूल गए लोग फ़िक्रे-रोज़ी में।
ख़याले-रिज़्क का कुछ ख़याल नहीं।।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

राष्ट्रीय नेता या सरकारें, किसी भी राजनीतिक दल से हों, उनको सामूहिक प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

आर्य नेता व समाजसेवी श्री सत्यानन्द आर्य जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'आजादी के समय आर्य समाज के 85 प्रतिशत आर्य अनुयायियों ने बलिदान दिये तथा प्रथम लोक सभा में इतने ही प्रतिशत से सांसद चुने गये। आज स्थिति अलग है लेकिन अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा यदि हम आज नववर्ष के अवसर पर यह प्रयास करें कि युवाओं को सुसंस्कृत किया जाना चाहिए तथा आर्य विचारधारा में लाने का पुरजोर प्रयास हो।

श्री आनन्द कुमार चौहान, एमिटी विश्वविद्यालय ने कहा कि ''वर्तमान परिवेश में आर्य समाज के कार्यो को अत्याधुनिक सुविधाओं से विकसित किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आर्यसमाज डिफेंस कालोनी की ओर से दिल्ली की आर्यसमाजों के लिए प्रति दो वर्ष में बेहतर व्यवस्था एवं स्वच्छता पुरस्कार दिए जाएंगे। प्रथम पुरस्कार 1 लाख, द्वितीय 51 हजार एवं तृतीय पुरस्कार 31 हजार रुपये की राशि के होंगे। आर्यसमाजों के निरीक्षण के उपरान्त समिति विजेता आर्यसमाज का नाम घोषित करेगी।

श्री विनय आर्य जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्यसमाज को स्थापित हुआ आज 143 वर्ष हो रहे हैं किन्तु केवल संस्था के रूप में। मूल में तो सृष्टि का आरम्भ ही आर्यों के द्वारा ही हुआ था और यह समाज आर्यों का ही समाज कहलाता था। ईश्वरीय आज्ञा वेद से दूर जाते रहने के चलते हम आज की परिस्थिति में पहुंच गए हैं। उन्होंने कहा 'सृष्टि के आरम्भ से वैदिक संस्कारों का श्रेष्ठ समाज रहा, महाभारत काल में परस्पर फूट व अशिक्षा, अंधकार से समाज दिग्भ्रमित हो गया जिसके फलस्वरूप समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वैदिक विचारधारा के अनुरूप आर्य समाज की स्थापना कर देश व मानव हित के लिए एक अभियान चलाया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम वेद के अनुसार इस संसार को बनाने के लिए कटिबद्ध हों। कोई भी व्यक्ति किसी और व्यक्ति की जिम्मेदारी न समझे। सभी अपनी जिम्मेदारियां समझकर ही आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए तत्पर रहें। हम विचार करें कि क्या जिन पद्धतियों से हम चल रहे हैं, जिन तौर-तरीकों से हम कार्य कर रहे हैं क्या हम इनसे अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेंगे? क्या हम परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करते हैं? यदि करते हैं तो क्या उसे हम करने के लिए तैयार हैं? यदि हम वर्तमान में चल रही गतिविधियों में आमूलचूल परिवर्तन करने के लिए तैयार हों तो ही हम कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ सकेंगे। हमें समाज में हो रहे नित नए परिवर्तनों के साथ चलना होगा। नित नई तकनीकों को अपनाना होगा। व्यवस्थाओं को बदलना होगा। अगर हम इनको बदलने के लिए प्रतिबद्ध होते हैं तो ही हम भविष्य की चुनौतियों से सामना करने योग्य बन सकेंगे। उन्होंने आह्वान किया कि हम परिवर्तन के लिए अपने आपको मानसिक रूप से तैयार करें और पुन:आर्यसमाज के उसी स्वर्णिम काल की ओर बढ़ें जिसकी चर्चा अब केवल इतिहास का भाग रह गई है। इस अवसर पर हम आज एक ही संकल्प लें कि इस जीवन का एक-एक क्षण और हमारे आर्यसमाज मन्दिर का एक-एक कोना आर्यसमाज के कार्य को बढ़ने के लिए समर्पित रहे। वह खाली न रहे। 24 घंटे आर्यसमाज में गतिविधियां चलती रहें। कभी ताला लगा दिखाई न दे। उन्होंने दिल्ली की विशिष्ट कार्य करने वाली कुछ आर्यसमाजों का उदाहरण देते हुए कहा कि यदि ये आर्यसमाजें इतना सब कुछ कर सकती हैं तो फिर अन्य क्यों नहीं। हमें केवल उनकी कार्य पद्धति और दृढ़ इच्छा शक्ति से कार्य करना सीखना चाहिए। उन्होंनें कहा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने साप्ताहिक सत्संगों की सुन्दरता, उपयोगिता एवं निरन्तरता, गुणवत्ता को लेकर पद्धति तैयार की है और आर्यसमाज मन्दिर के लिए कार्यों को लेकर गाईड लाइन तैयार की है जिनके आधार पर कार्य करने पर निश्चित रूप से हमारे आने वाले समय में सार्थक सिद्ध होंगी। इन कार्यों को मई मास से समाजों तक पहुंचाने का कार्य आरम्भ किया जाएगा।

उन्होंने सभी महानुभावों से निवेदन किया कि आर्यासमाज के साप्ताहिक सत्संगों में सुधार लाने की दिशा में अपने सुझाव सभा के ईमेल पते aryasabha @yahoo.com पर अवश्य भेजें ताकि गाइड लाइनों मे उन पर विचार करके समाहित किया जा सके। उन्होंने साप्ताहिक सत्संगों में आर्यसमाज के सदस्यों की संख्या बढ़ाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें यज्ञ को हर घर में पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए।

आचार्य सन्तोष शास्त्री जी एवं आचार्य दयासागर जी जोकि नागालैण्ड से विशेष रूप से इस कार्यक्रम में भाग लेने आये थे दोनों ही वैदिक विद्वानों ने अपने सहयोगियों के साथ अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत उन पिछड़े क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं जहा ईसाईयत व इस्लामियत भोली भाली व मासूम जनता को बहकावे में लाकर ईसाई व मुसलमान बना रही है वहां विद्या के प्रचार-प्रसार द्वारा न केवल उपरोक्त कार्यों को रोक रहे हैं बल्कि महर्षि देव दयानन्द द्वारा दिखाये जन कल्याण

- शेष पृष्ठ 8 पर

दीप प्रज्ज्वलित करते श्री सतपाल भरारा जी साथ में श्री विद्यामित्र ठुकराल जी एवं श्री ओम प्रकाश आर्य जी। उद्बोधन देते मुख्य अतिथि श्री आनन्द कुमार चौहान, उप प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी एवं समारोह अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी। श्री राजेन्द्र जी एवं श्री प्रेम अरोड़ा जी का स्वागत करते श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं श्री कीर्ति शर्मा

सांस्कृतिक प्रस्तुति देते विभिन्न विद्यालयों/गुरुकुलों के विद्यार्थीगण

श्री मामचन्द रिवाड़िया जी का सम्मान। बोधोत्सव पर सम्पन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

प्रथम पृष्ठ का शेष

तन समर्पित – मन समर्पित और यह जीवन समर्पित – चाहता हूं देश की धरती – तुझे कुछ और भी दूँ

समारोह का शुभारम्भ कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या अन्नपूर्णा जी के ब्रह्मत्व में आयोजित निष्काम दीर्घायुष यज्ञ से किया गया। जिसमें महाशय धर्मपाल के परिवार सुपुत्र महाशय राजीव गुलाटी, पुत्रवधु श्रीमती ज्योति गुलाटी, सुपौत्रियों सहित उनकी सुपुत्रियों एवं जामाता ने उपस्थिति होकर आहुतियां प्रदान की। यज्ञ ब्रह्मा आचार्या अन्न पूर्णा जी द्वारा बहुत ही सुन्दर प्रवचन किया गया।

इस अवसर पर महाशय धर्मपाल जी के परिवार द्वारा आर्य अनाथालय चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर में अध्ययनरत 500 निराश्रित कन्याओं को अपने हाथों से भोजन कराया गया। चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर के सचिव नितिञ्जय चौधरी एवं माता श्रीबाला चौधरी जी ने महाशय जी को शुभकामनाएं देते हुए धन्यवाद किया।

जन्मोत्सव समारोह 'सपर्मण' में आर्य कन्या गुरुकुल सैनिक विहार की बालिकाओं ने सुन्दर प्रस्तुति दी। आर्य पब्लिक स्कूल राजाबाजा के नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा सुन्दर गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया। आर्य गुरुकुल रानी बाग में पढ़ने वाले विद्यार्थियों द्वारा एक सुन्दर गीत जोकि भिवानी जेल के एक कैदी द्वारा लिखा एवं वहीं कम्पोज भी किया गया था, का मंचन किया। महाशय जी ने समस्त बालकों को प्रसन्न हृदय के साथ आशीर्वाद दिया।

कु. नन्दिनी आर्या ने महाशय जी के समर्पण के सम्बन्धित जानकारी की एवं महाशय जी के जीवन की विशेषताओं एवं उन द्वारा समाज एवं राष्ट्र हित में किए जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। देश के विभिन्न पदेशों से के साथ साथ नेपाल से पधारे आर्यजनों एवं संन्यासी महानुभावों ने महाशय जी को अपनु शुभकानाएं एवं आशीर्वाद प्रदान किया।

सुप्रसिद्ध आशु कवि श्री विजय गुप्त जी ने महाशय जी को अपने कवित्त के माध्यम से बधाई दी। हास्य कवि श्री राजेश चेतन जी एवं चार लाईना के नाम से प्रसिद्ध हास्य कवि जो सारे जहान को तो हंसाते हैं किन्तु स्वयं नहीं हंसते श्री सुरेन्द्र शर्मा जी ने अपने मुक्तकों, गीतों, छन्दों के माध्यम से उपस्थ्ति जन समुदाय से कहा कि जीवन के लिए हंसी बहुत जरूरी है। महाशय जी के स्वयं के चेहरे पर हंसी तो रहती ही है वे हर वर्ग को, गरीब से गरीब व्यक्ति को भी हंसाने का और उनके जीवन मे खुशी भरने का कार्य करते हैं।

महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि मैं चाहता हूं आर्यसमाज का कार्य करता रहूं। वैदिक धर्म के कार्य करता रहूं। करता ही रहूं – करता ही रहूं। आप सब ऐसा आशीर्वाद दें कि मेरी ये इच्छा पूर्ण होती रहे-पूर्ण होती ही रहे।

मंच संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने किया।

94वें जन्मदिवस समारोह के अवसर पर प्रेरक प्रस्तुति : आर्य पब्लिक स्कूल राजा बाजार एवं आर्य गुरुकुल रानी बाग के विद्यार्थी

काव्यपाठ करते आशुकवि श्री विजय गुप्त जी, हास्यकवि श्री राजेश चेतन एवं सुरेन्द्र शर्मा जी। बधाई गीत – श्री अविरल एवं सुकृति माथुर।

सेवाश्रम संघ की ओर से भेंट देते जोगेन्द्र खट्टर

महाशय धर्मपाल जी को शुभकामनाएं देते आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अधिकारीगण, एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल की अध्यापिकाएं, शुभकामनाएं देते श्री योगेश मुंजाल जी

नेपाल से पधारे आर्यजन शुभकामनाएं देते हुए

चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की ओर से शुभकामनाएं देते सचिव नितिञ्जय चौधरी

जन्मदिवस की शुभकामनाएं देने के लिए दिल्ली ही नहीं विभिन्न राज्यों से पधारे आर्यजनों से खचाखच भरा आर्य ऑडिटोरियम का सभागार

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के 117वें जन्मदिवस के अवसर पर

आर्य महासम्मेलन : 12-13 अप्रैल, 2017

दयानन्द मठ, दीनानगर, जिला – गुरदासपुर (पंजाब)

इस अवस पर विभिन्न सम्मेलनों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। आप सब सादर आमन्त्रित हैं । – ***स्वामी सदानन्द सरस्वती, अध्यक्ष***

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Sacred Fire

"The sacred fire is the master of the house. He is the respectable guest and source of all prosperity. May this fire, donor of the lasting riches, friend of the virtuous house-holders, the lone invigorator of our duties bestow on us power and energy."

"O ladle, carry our oblations full to the brim with clarified butter and magnify our benefits. May the sacrificial fire be fully contented. May the divine fragrance spread over in all directions. O accomplsher of noble deeds, let us both join to give and take reciprocally: the food to take and the vigour to give."

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्यः प्रजाया वसुवित्तमः।

अग्ने गृहपतेऽभि द्युम्नमभि सहऽआयच्छस्व ।। (Yv. iii.39)

पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरापत।

वस्नेव विक्रीणावहाऽइषमूर्जं शतक्रतो।। (Yv. iii.49)

Aayamagnirgrhapatirgarhapatyah prajaya vasuvittamah.

agne grahapate'bhi dyumnamabhi saha ayacchasva..

Purna darvi para pata supurna punarapata. vasneva vikrinavaha isamurjam satakrato..

Pasu Yaga is not animal sacrifice.

Yajurveda exhorts for protection of animals.'May you grant happiness to our progeny and safety to the animals'. 'May you never harm the creatures[2]" Protect our quadrupeds[3]", So much so, the priest representing Yajurveda in a fire ritual is known as "Adhvaryu", one who maintains non-violence in letter and spirit during the ceremony. Yajna is "Advara", the supreme nonviolent thought and action, mentioned in the Vedic Texts.In earliest times, animals were procured, domesticated and harnessed for useful purposes. They were not meant for killing or for immolation. In cosmology, earth is ca;;ed tje barren goat, it was made fertile. Pasu also means an animal in the terrestrial realm. Yajurveda chapter(xxiii) mentions the fire, the wind, the sun as Pasu. In the cosmic creation air, fire and finally the sun were manifested. Planets and satellites are named as Pasu. Horse (asva), cow (gau), goat (aja), sheep (avi) belong to mid-space denoting heavenly bodies. Asva is particle of rice, aja is old paddy, mansa is fruit juice. Such symbolic terms are not to be confused with earthly animals.

1. **शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।**(Yv. xxxvi.22)
2. **मा हिँसीस्तन्वा प्रजाः** (Yv. xii.32)
3. **चतुष्पात्पाहि।**(Yv. xiv. 8)

1.Sam nah kuru prajabhyo' bhayam nah pasubhyah.

2. Ma himistanva prajah.

3- catuspat pahi.

O Children of Immortality

"I unite both the mind and the speech, the two foremost sources of communication of knowlege. Men may now speak whatever there is in their mind. Like a soldier carrying his ration, May they treat their speech to sustain what they have in mind. Let all the children of the Immortal One, occupying positions of learning, listen to those btave men who have attained harmony of thought and speech".

The verse lays stress on the necessity of harmony between thought and speech. May the blessed children of Immortal Lord listen to this dictum. The text speaks of four grades of human speech - Para, Pasyanti, madhyama, and Vaikhari eleborating how the innermost 'Para vani" gradually loses its sanctity ending in the incohesive expression of the tongue. Truly thoughts reflect in the speech of the enlightened ones who have established the proper link between the mind and the tongue.

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः।

श्रृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः।। (Yv. xi.5)

Yuje vam brahma purvyam namobhir vi sloka etu pathyeve sureh.

srnvantu visve amrtasya putra a ye dhamani divyani tathuh..

To be Conti....

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 22 (अ)

गतांक से आगे....

4. ददाति = देता है/देती है।

सः ददाति = वह देता है।
सा ददाति = वह देती है।
एषः ददाति = यह देता है।
एषा ददाति = यह देती है।
कः ददाति ? = कौन देता है?
नीलेशः ददाति = नीलेश देता है।
नीलेशः किं ददाति ?
= नीलेश क्या देता है?
नीलेशः पुस्तकं ददाति।
= नीलेश पुस्तक देता है
का ददाति ? = कौन देती है?
वृन्दा ददाति = वृन्दा देती है
वृन्दा किं ददाति ?
= वृन्दा क्या देती है?
वृन्दा धनं ददाति।
= वृन्दा धन देती है।
अहम् ददामि = मैं देता हूँ/ देती हूँ।

5. उत्तिष्ठति = उठता है/खड़ा होता है।

सः उत्तिष्ठति = वह उठता है।
सा उत्तिष्ठति = वह उठती है।
एषः उत्तिष्ठति = यह खड़ा होता है।
एषा उत्तिष्ठति = यह खड़ी होती है।
कः उत्तिष्ठति ? = कौन खड़ा होता है?
दीपेशः उत्तिष्ठति = दीपेश खड़ा होता है।
दीपेशः कुतः उत्तिष्ठति ?
= दीपेश कहाँ से उठता है?
दीपेशः पर्यकात् उत्तिष्ठति।
= दीपेश पलंग से उठता है।
का उत्तिष्ठति ? = कौन उठती है?
जया उत्तिष्ठति = जया उठती है।
जया कदा उत्तिष्ठति ?
= जया कब उठती है?
जया प्रातः पृच्छिवादने उत्तिष्ठति।
= जया सुबह पाँच बजे उठती है।
अहम् उत्तिष्ठामि = मैं उठता हूँ/उठती हूँ।

6. पिबति = पीता है

सः पिबति = वह पीता है।
सा पिबति = वह पीती है।
एषः पिबति = यह पीता है।
एषा पिबति = यह पीती है।
कः पिबति ? = कौन पीता है?
लोकेशः पिबति = लोकेश पीता है।
लोकेशः किं पिबति ?
= लोकेश क्या पीता है?
लोकेशः दुग्धं पिबति।
= लोकेश दूध पीता है
का पिबति ? = कौन पीती है?
विभा पिबति = विभा पीती है।
विभा किं पिबति ? = विभा क्या पीती है?
विभा तक्रं पिबति = विभा छाछ पीती है।
अहम् पिबामि = मैं पीता हूँ/पीती हूँ।

- क्रमशः -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

वे सबको जानते थे

अमृतसर में एक आर्य पुरुष हुए हैं। उनका नाम था रामसिंहजी। उन्हें लोग आदर से उस्ताद रामसिंह कहा करते थे। वे सिख परिवार से सम्बन्ध रखते थे। उन दिनों अमृतसर में बहुत-से सिख आर्यसमाज में सक्रिय होकर कार्य करते थे। रामसिंहजी व्यायाम शिक्षक थे। उनका कार्य जिलाभर के स्कूलों में जाकर व्यायाम सिखलाना था।

उनकी वाणी में रस था। भक्तराज अमींचन्दजी के भजन बड़े भक्तिभाव से गाया करते थे। भजन सुनने के भी बड़े रसिक थे। वे जब आर्यसमाज से सत्संग में आते थे तो उस समय के आर्यपुरुष उनका हार्दिक स्वागत किया करते थे। पण्डित विष्णुदत्तजी ने लिखा है कि सम्भवतः उन-जैसा सत्कार बड़े व्यक्ति को भी न मिलता था। इससे पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि उस्ताद रामसिंह कितने ऊँचे चरित्र के आर्य थे।

उन दिनों हिन्दू सिख प्रायः अंग्रेजी पढ़ते-पढ़ते ईसाई हो जाते थे और फारसी पढ़ते-पढ़ते मुसलमान हो जाया करते थे। आर्यसमाज ने इस प्रवाह को रोका। अमृतसर का एक सिख एक प्रतिष्ठित मौलवी (वे कारी कहे जाते थे) से फारसी पढ़ता-पढ़ता मुसलमान बन गया। मौलवी ने उसे अपनी पुत्री दे दी।

उस्ताद रामसिंह को जब कभी पता लग जाता कि कोई सिख अथवा हिन्दू युवक ईसाई या मुसलमान बनने लगा है तो वे उसे बचाने के लिए एकदम आगे आ जाते थे। इस कार्य में वे सुदक्ष थे। उनकी वाणी का पाषाण-हृदयों पर भी प्रभाव पड़ता था। उन दिनों आर्यसमाज अमृतसर ने इस दिशा में जो ऐतिहासिक कार्य किया, उसका बहुत-सा श्रेय श्री धर्मवीर रामसिंह जी को जाता है। वे एक वीर योद्धा थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली

दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आर्य समाज नारायणा विहार का 46वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नारायणा विहार अपना 46वां वार्षिकोत्सव 3 से 9 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। श्रीराम कथा आचार्य श्यामदेव शास्त्री द्वारा तथा भजनश्री राजवीर जी व साथियों द्वारा होंगे।

-दर्शनलाल कत्याल, प्रधान

आर्य समाज मुम्बई का 143वां स्थापना दिवस समारोह

विश्व की सर्वप्रथम आर्य समाज मुम्बई का 143वां स्थापना दिवस समारोह 28 मार्च 2017 काकड़वाडी गली, वी. पी. रोड. मुम्बई में सम्पन्न हुआ।

-पं. देवदत्त शर्मा,संयोजक

ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मानसरोवर, जयपुर के तत्त्वावधान में 21 फरवरी को ऋषि दयानन्द जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। राजस्थान के अग्रणी आर्य समाज आदर्श नगर में अग्निहोत्र के पश्चात् स्वामी दयानन्द जी के बहुआयामी कृतित्त्व का उल्लेख विभिन्न विद्वानों ने किया।इस अवसर पर 'महर्षि के जन्म को विश्व की युगान्तरकारी घटना बताया गया तथा उन्हें क्षमा-दया का प्रतिरूप बताया।

आवश्यकता है पुरोहित की

दक्षिण दिल्ली की प्रतिष्ठित आर्य समाज को सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। योग्य व्यक्ति अपना बायोडाटा ईमेल करें- aryasabha @yahoo.com ईमेल के विषय कॉलम में 'पुरोहित' अवश्य लिखें।

- महामन्त्री, 9958174441

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

आर्य समाज सागरपुर का 37वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सागरपुर का 37वां वार्षिकोत्सव 14 से 16 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर 11, 12, 13 अप्रैल को प्रभात फेरी निकाली जाएगी। प्रवचन आचार्य भद्रकाम वर्णी जी एवं भजनोपदेश श्री टीकम सिंह मधुर के होंगे। समापन समारोह 16 अप्रैल होगा। *- मान्धाता सिंह आर्य, मन्त्री*

स्वर्ण जयन्ती समारोह

आर्य समाज जे.जे. कालोनी वजीर पुर दिल्ली का स्वर्ण जयन्ती समारोह 18, 29, 30 अप्रैल को मनाया जाएगा। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों एवं सम्मेलनों का आयोजन किया जाएगा।

- भूदेव आर्य, मन्त्री

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?
आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?
आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?
आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम. एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

आर्य समाज मॉडल बस्ती का 73वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा का 73वां वार्षिकोत्सव 6 से 9 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर यजुवेद शतकम यज्ञ का आयोजन किया जाएगा। यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन समारोह 9 अप्रैल होगा।

- आदर्श कुमार आहूजा, मन्त्री

आर्य समाज कोटला मुबारकपुर में चतुर्वेद शतक यज्ञ

आर्य समाज कोटला मुबारकपुर नई दिल्ली के द्वारा आर्यसमाज स्थापा दिवस, रामनवमी एवं बैशाखी के अवसर पर चतुर्वेद शतक यज्ञ आचार्य मोहित शास्त्री के ब्रह्मत्व में 7 से 9 अप्रैल तक आयोजित किया जा रहा है। यज्ञ पूर्णाहुति एवं समापन समारोह के अवसर पर आर्य सम्मेलन का आयोजन प्रात: 10 बजे से 1 बजे तक किया जाएगा।

- बालकिशनदास आर्य, महामन्त्री

स्वाईन फ्लू निवारण यज्ञ

जयपुर बीते वर्ष की अंतिम तिमाही से ही राजस्थान प्रदेश में घातक स्वाईन फ्लू की दस्तक के साथ ही नगर की स्वाईन फ्लू निवारण यज्ञ समिमि सक्रिय हो उठी। अनेक अंचलों में स्वाईन फ्लू निवारण यज्ञ सम्पन्न हुए। 11 मार्च होलिकोत्सव की पूर्व संध्या पर गोपालपुर बाईपास स्थित हिण्डौन हाईट्स परिसर में स्वाईन फ्लू निवारण व मानव कल्याण विश्व शान्ति यज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। यज्ञ में राजस्थान सरकार के चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री श्री काली चरण सर्राफ ने भी आहुति अर्पित की। संयोजक यशपाल 'यश' ने यज्ञों द्वारा विषाणुओं, परमाणु विकिरण व प्रदूषण निवारण के लिए प्रयुक्त-सामग्री के मिश्रण व वैज्ञानिक प्रामाणिकता का उल्लेख किया।

-ईश्वर दयाल माथुर

वैदिक भौतिक विज्ञान का शंखनाद

वैदिक भौतिक विज्ञान का शंखनाद 4 से 5 अप्रैल 2017, को भागल भीम, वाया भीनमाल, जिला-जालोर (राज.) में स्वामी डॉ. ओम आनन्द सरस्वती, चितौड़गढ एवं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, अलीगढ़ (उ.प्र.) के सानिध्य में एवं स्वामी वेदानन्द सरस्वती, उत्तरकाशी की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अनिल गुप्ता आई ए एस जालोर होंगे। *-चौ. यशवीर सिंह आर्य, संयोजक*

योग शिक्षित आर्य लेखक की आवश्यकता है

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक छात्रों को योगासन प्रशिक्षण हेतु एवं वैदिक सिद्धान्तों पर लेख तथा ट्रेक्ट लिखने में रुचि रखने वाले अविवाहित युवा स्नातक की आवश्यकता है। दोनों विधाओं में पारंगत अथवा इच्छुक युवा को समृद्ध ग्रंथालय, निवास तथा उचित वेतन की व्यवस्था की जायेगी। गुरुकुलीय स्नातक, ब्रह्मचारी को प्राधान्य। सम्पर्क करें-

डॉ. चन्द्रशेखर लोखण्डे
सीताराम नगर, लातूर-413531
(महाराष्ट्र) मो. 09922255597

आर्यजन ध्यान दें

समस्त आर्य परिवारों से निवेदन है कि यदि आपके कोई सम्बन्धी/रिश्तेदार/परिचित या आर्य विचारधारा से प्रेरित कोई व्यक्ति भारत के अन्दमान-निकोबार, लक्ष्यद्वीप या गोवा में रहते हैं अथवा नौकरी करते हैं तो कृपया उनका नाम, पता, दूरभाष तथा ईमेल हमें भेजने की कृपा करें ताकि उनसे सम्पर्क करके वहां आर्यसमाज की स्थापना का प्रयास किया जा सके।-*मन्त्री, सार्वदेशिक सभा*
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

शोक समाचार

आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक का निधन

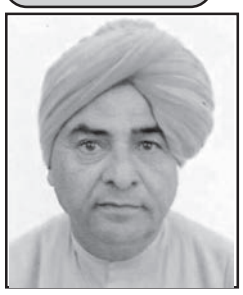

आर्य जगत में वैदिक साहित्य के प्रकाशक एवं प्रचारक के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुके आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक जी का रविवार 2 अप्रैल को देहरादून में निधन हो गया। वे कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे तथा देहरादून में प्राकृतिक चिकित्सा करा रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन 3 अप्रैल को गुरुकुल झज्जर में पूर्ण वैदिक रीति से साथ किया गया।

उनकी स्मृति श्रद्धांजलि सभा शुक्रवार 7 अप्रैल, 2017 को गुरुकुल झज्जर में प्रात: 9 से 12 बजे तक सम्पन्न सम्पन्न होगी।

श्री तारानाथ मैनाली को पितृशोक

आर्यसमाज नेपाल के कर्मठ कार्यकर्ता एवं अधिकारी श्री तारानाथ मैनाली जी के पूज्य पिता श्री मोहन मैनाली जी का 2 अप्रैल, 2017 को नेपाल में निधन हो गया। वे काफी समय से अस्वस्थ चल रहे थे तथा काठमांडू के चिकित्सालय में भर्ती थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे।-सम्पादक

समस्त विद्यालयों एवं विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षा के उत्कृष्ट परिणामों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली द्वारा
समस्त विद्यालयों/आर्य शिक्षण संस्थाओं हेतु प्रकाशित

नैतिक शिक्षा की पुस्तकें

नर्सरी से 12वीं कक्षा तक

आकर्षक छूट 25%

बेहतरीन कागज पर आकर्षक छपाई में तैयार कराई गई नैतिक शिक्षा की पुस्तकें छात्रों के नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक ज्ञान तथा राष्ट्रीय भावना जागृत करने वाली हैं। आर्य विद्या परिषद् द्वारा प्रकाशित कराई गई नैतिक शिक्षा की ये पुस्तकें दिल्ली के समस्त विद्यालयों/शिक्षण संस्थाओं के साथ-साथ दिल्ली से बाहर अन्य प्रदेशों के विद्यालयों के पाठ्यक्रम में भी नर्सरी से कक्षा 12वीं तक लागू हैं। अपने विद्यालय/शिक्षण संस्था के लिए आवश्यकतानुसार मंगवाने के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001
☎ : 23360150, 9540040339; Email : aryasabha@yahoo.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 3 अप्रैल, 2017 से रविवार 9 अप्रैल, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 6/7 अप्रैल, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 5 अप्रैल, 2017

पृष्ठ 4 का शेष

भविष्य की चुनौतियों से .....

कार्यों को बढ़ा रहे हैं और वहां के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में विद्या द्वारा प्रगति कराई जा रही है।

कार्यक्रम से पूर्व डा. ऋषिपाल शास्त्री जी के निर्देशन में यज्ञ द्वारा आरम्भ हुआ जिसके यज्ञमान, श्रीमती सध्या व श्री नीरज आर्य, श्रीमती सुषमा व श्री वीरेन्द्र सरदाना, श्रीमती हर्ष व श्री ईश नांरग तथा श्रीमती सवित्री व श्री हीरा लाल चावला, कु. स्नेहा व प्रिया आर्य ने बड़ी श्रद्धा व भक्ति भाव द्वारा वेदमन्त्रों से नव वर्ष और आर्यसमाज स्थापना दिवस के पावन अवसर पर वेद मन्त्रों द्वारा प्रभु का गुणगान करते हुये उपस्थित आर्य बन्धुओं का आशीर्वाद और शुभकामनायें प्राप्त कीं।

मंचीय कार्यक्रमों का शुभारम्भ श्री सत्पाल भरारा जी, चैयरमैन महर्षि दयानन्द जन कल्याण ट्रस्ट, श्री धर्मपाल आर्य, श्री सत्यानन्द आर्य, श्री सुरेन्द्र कुमार रैली, श्री मदनमोहन सलूजा, श्री विद्यामित्र ठुकराल, श्री विनय आर्य, श्री विक्रम नरुला, श्री अजय सहगल के साथ मिल कर दीप प्रज्ज्वलित किया।

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री जगत वर्मा जी ने मधुर, सुन्दर, मनमोहक व लयबद्ध प्रेरणा पद प्रभु भक्ति से युक्त महर्षि दयानन्द द्वारा किये कार्यों व देश भक्ति पूर्ण भजनों द्वारा आर्यजनों का मन मोह लिया। आर्य गरुकुल तिहाड़ गॉव के ब्रह्मचारियों द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया जिसे गुरुकूल में ही लिखा गया था और एक संगीतमय स्तूप का मंचन किया। महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, शादी खामपुर के बच्चों ने 'आर्यसमाज विचार धारा' विषय पर मनमोहक नाटिका की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर आर्ष विद्या सभा के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न विद्यालयों व गुरुकुलों के विद्यार्थियों ने, जिन्होंने ऋषि मेले (24 फरवरी 17) पर खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया था, उन्हें प्रमाण पत्र तथा पुरस्कार (97 विद्याथियों को) प्रदान किये गये। इन खेल प्रतियोगितओं में महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्यसमाज शादीखामपुर (प्रथम स्थान), दयानन्द आदर्श विद्यालय, आर्यसमाज तिलक नगर (द्वितीय स्थान) तथा आर्यसमाज सी3 पंखा रोड (तृतीय स्थान) के अधिकारियों ने सामूहिक पुरस्कार स्मृति चिह्न सहित प्रदान किये गये।

सतीश चड्डा महामंत्री ने मंच संयोजन करते हुए आर्य सदस्यों को जानकारी दी कि वह दिन दूर नहीं जब वैदिक संस्कृति के अनुरूप विश्व उसी राह पर चलेगा जो वेद ज्ञान द्वारा प्रकट होते हैं क्योंकि वेदों के एक अंग योग को आज विश्व ने मान लिया है। पर्यावरण की शुद्धि हेतु शीघ्र ही यज्ञ को भी यह सम्मान मिलेगा क्योंकि यज्ञ पर हुए शोध अनुसंधानों से यह सिद्ध हो गया है कि यज्ञ एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा पर्यावरण को शुद्ध व सामान्य बनाया जा सकता है जोकि मनुष्य जाति के लिए आवश्यक है। आज पश्चिम के वैज्ञानिक भी शोध द्वारा यह मानने लग गये हैं कि सूर्य की लपटों से जो ध्वनि निकल रही है वह भी ओ३म्, ओ३म्, ओ३म्..... ही है। यह सिद्ध करता है कि वेदों में लिखी वाणी सत्य व सार्वभौमिक है।' इस अवसर पर श्री धीरज घई सुपुत्र श्री वीरेन्द्र कुमार घई आर्य कार्यकर्त्ता स्मृति पुरस्कार से श्री मामचन्द रिवाड़िया जी को सम्मानित किया गया। श्री हरिओम बसंल जी के विशेष योगदान व कार्यो हेतु सहपरिवार सम्मान करते हुए स्मृति चिह्न प्रदान किया गया। सभी दानदाताओं ने श्रद्धाभाव से यथा शक्ति सात्विक दान दिया। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनके सात्विक धन में वृद्धि हो और वह हमें शुभ कार्यों हेतु प्रोत्साहित करते रहें। आर्य कार्यकर्त्ताओं जिनकी सेवाओं से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ उन सबका हार्दिक धन्यवाद।

प्रतिष्ठा में,

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

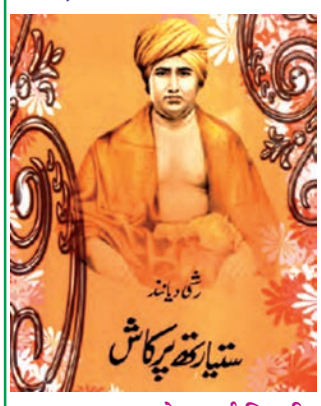

सत्यार्थ प्रकाश

(उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य : 100/- रुपये

श्री बलदेव राज महाजन जी

(आर्यसमाज आर्यनगर, पटपड़गंज)

के विशेष सहयोग से

केवल मात्र 70/- में

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. 9540040339

भारत के सांस्कृति सन्तुलन की रक्षा हम सब का दायित्व

इन पांच पुस्तकों को अवश्य पढ़ें

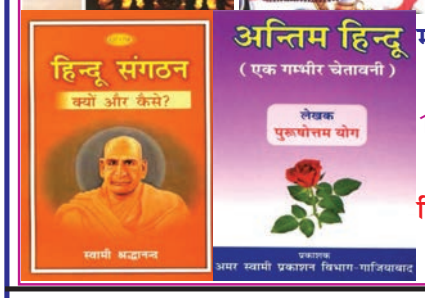

मूल्य : 205/- रुपये

प्रचारार्थ मूल्य :

150/- रुपये मात्र

प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें:

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

मो. 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह